



वर्ष 5

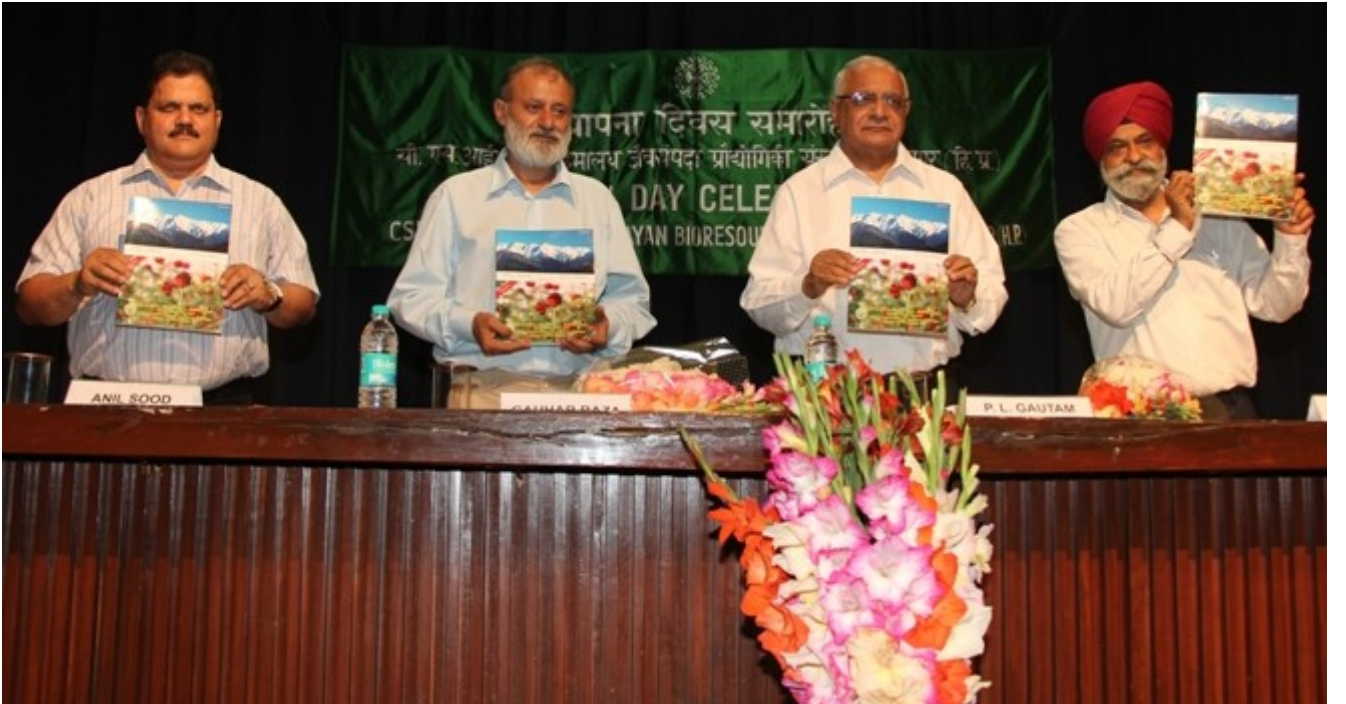
अप्रैल- जून 2013

अंक 17

सी.एस.आई.आर.-आई.एच.बी.टी. स्थापना दिवस

संस्थान ने अपना स्थापना दिवस 10 जून 2013 को मनाया। केरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, हमीरपुर के कुलपति डा. पी.एल. गौतम ने "जैवविविधता एवं समाज" विषय पर स्थापना दिवस संभाषण दिया। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि इस

धरती पर सभी जीवों की धुरी जैवविविधता है। दुर्भाग्यवश यह बड़ी तेजी से नष्ट हो रही है। अतः यह हमारा महत्वपूर्ण दायित्व हो जाता है कि हम इसके प्रति जागरूकता लाएं तथा भावी पीढ़ियों के लिए इसे संरक्षित करने के लिए संकल्प लें। इसमें सभी साझेदारों की भागेदारी आवश्यक है ताकि जैवविविधता का सर्वेक्षण किया जा



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर—हिमाचल प्रदेश

सके तथा तथ्यों को आंकड़ाबद्ध किया जा सके। इसके अतिरिक्त पारम्परिक ज्ञान को लिपिबद्ध करना भी हमारी जिम्मेदारी है। डा. गौतम ने इकालॉजिकल फुटप्रिंटिंग करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि इसे आगे बढ़ाने के लिए संस्थान तेज गति से प्रयत्न करेगा।

इससे पूर्व समारोह में संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के वर्ष 2012-13 के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में बताया कि केलांग के रिबलिंग में हमारे संस्थान की पहल से पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के उच्च पर्वतीय जलवायु युक्त स्थानों में शोध व विकास को गति मिली है। रिबलिंग क्षेत्र में हिपोफी जर्मप्लाज़म एकत्रण केन्द्र के साथ-साथ एक वानस्पतिक उद्यान भी तैयार किया जा रहा है। लाहौल में बकव्हीट से 'लाहौली पफ' पर ध्यान केन्द्रित और निवेश करके

सीएसआईआर-आई.एच.बी.टी. ने खाद्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने दावे को और मजबूत किया है। हमारे वैज्ञानिकों ने सेब के भुक्तशेष से सफलतापूर्वक उत्पाद विकसित किए हैं। संस्थान ने 'मेंगो बार' और 'पफ्ड राइस बार' को भी विकसित किया है जो कि राष्ट्रीय पोषण कार्यक्रम की जरूरतों को पूरा करने में सहायक होंगे।

सुन्दरता में चार चांद लगाने के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी ने कांटा रहित गुलाब 'द हिमालयन वंडर' तथा 'हिमालयन ग्लोरी' नामक प्रजातियों को जारी किया। हमारे वैज्ञानिकों ने 'फर्स्ट रेड' प्रजाति के किमेरा से इनको विकसित किया है।

इस सुअवसर पर संस्थान के वर्ष 2012-13 के वार्षिक प्रतिवेदन का विमोचन भी किया गया तथा संस्थान की गतिविधियों से संबन्धित फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। जाने माने वैज्ञानिक डा. गौहर रजा और डा. अनुपम वर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस समारोह में संस्थान के स्टाफ के अतिरिक्त स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय,

आई.वी.आर.आई., एवं अन्य विभागों के अधिकारियों, पालमपुर के गणमान्य व्यक्तियों एवं मीडिया के लोगों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

संस्थान में 11 मई 2013 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। पूरे भारत में यह दिवस 11 मई 1998 को पोखरण में सफलतापूर्वक किए गये परमाणु विस्फोट के स्मरण में मनाया जाता है।

समारोह की अध्यक्षता मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश विधानसभा के माननीय अध्यक्ष श्री बी.बी.एल. बुटेल ने की उन्होंने अपने संबोधन में कांगड़ा चाय की विशेषताओं,

चुनौतियों तथा इसके सुधार के लिए किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। समारोह के मुख्य वक्ता भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मण्डी के निदेशक डा. टी. ए. गोंज़ाल्विस ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में नवोन्मेष प्रोत्साहन' विषय पर प्रौद्योगिकी दिवस संभाषण दिया। उन्होंने भारत के विभिन्न प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा भारत के विकास एवं उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का स्थान अग्रणी है। उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा बताया कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मण्डी तथा आई.एच.बी.टी., पालमपुर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध में परस्पर सहयोग करेंगे।



हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर—हिमाचल प्रदेश

इससे पूर्व संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व के बारे में बताते हुए विज्ञान के क्षेत्र में अपार संभावनाओं पर चर्चा की। निदेशक महोदय ने सूचित किया कि 12वीं पंचवर्षीय योजना में चाय मशीनीकरण के लिए 500 है. क्षेत्र का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए संस्थान, चाय उत्पादक संघ एवं भारतीय चाय बोर्ड मिलकर काम करेंगे। इसके अन्तर्गत संस्थान शताब्दी से स्थापित चाय बागानों के मशीनीकरण की दिशा में सस्ती एवं उपयुक्त तकनीक उपलब्ध करा सकती है। इसके अलावा संस्थान एक उपयुक्त जैकेट के निर्माण में मदद करेगा जो मशीन द्वारा चाय की पतियों की तुड़ाई में चाय के पौधों को समतल बनाए रखने में उपयुक्त होगी। इस संबंध में संस्थान प्रशिक्षण भी प्रदान करेगा। हिमालय क्षेत्र के विकास के लिए जलविद्युत से ऊर्जा उत्पादन बहुत ही महत्वपूर्ण है, फलस्वरूप इन परियोजनाओं स्थलों में से निकले मलबे को इधर-उधर फेंक देने से होने वाले पर्यावरणीय संकट गम्भीर हैं। संस्थान के वैज्ञानिकों ने हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले के एनएचपीसी परियोजना के 10 स्थलों में सफलतापूर्व

हरियाली ला दी है और इस विशिष्ट पहल से इस प्रकार के अन्य स्थलों के उद्धार के लिए एक मिसाल कायम हो गई है। सेब के अवशेष से विभिन्न उत्पाद बनाने की दिशा में भी काफी प्रगति हुई है। विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक खाद्य प्रदार्थ बनाने का कार्य प्रगति पर है। जल्द ही कुछ उत्पादों की तकनीक को उद्योगों को उपलब्ध करा दिया जाएगा इसके लिए संस्थान प्रयासरत है।

आई.एच.बी.टी. के लक्ष्य के बारे में बताते हुए डा. आहूजा ने कहा कि संस्थान किसानों एवं उद्यमियों के लाभ के लिए प्रति इकाई जैव संसधानों के उत्पादन को बढ़ाने एवं क्षेत्र के समाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नरत है। उन्होंने संस्थान की अन्य गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई चाय पर विस्तृत जानकारी युक्त पुस्तक का विमोचन माननीय अध्यक्ष विद्यानसभा श्री बुटेल ने किया।

इस समारोह में संस्थान के स्टाफ के अतिरिक्त स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, आई.वी.आर.आई., आई.जी.एफ.आर.आई. एवं अन्य विभागों के अधिकारियों, पालमपुर के गणमान्य व्यक्तियों एवं मीडिया के लोगों ने भाग लिया।

साहित्यिक संवाद एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

रचना साहित्य एवं कला मंच, पालमपुर द्वारा भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश एवं हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-हिमाचल प्रदेश के सहयोग से 25 जून 2013 आई.एच.बी.टी. परिसर में कहानी संवाद एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश एवं हिमाचल कला भाषा एवं संस्कृति अकादमी के सचिव डा. देवेन्द्र गुप्ता ने की। इस अवसर पर डा. आशु फुल्ल की पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास : उदभव एवं विकास' का विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि डा. परमवीर सिंह आहूजा ने किया।



मुख्य अतिथि डा. परमवीर सिंह आहूजा ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि

सांस्कृतिक दृष्टि से ऐसा समय आ गया है कि तारतम्य टूटता हुआ जान पड़ता है। आधुनिक जीवन का एकाकीपन समकालीन समस्याओं के समक्ष विकट परिस्थितियां उत्पन्न करता है। संस्थान में साहित्यिक वातावरण से नवसंचार का उदय होता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भाषा एवं संस्कृति विभाग के निदेशक डा. देवेन्द्र गुप्ता ने कहा कि विभाग लेखकों-कलाकारों के लिए अनेक योजनाएं कार्यान्वित की जाएगीं। नये और पुराने लेखकों के बीच बेहतर संवाद के लिए आयोजन किए जाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने विभागीय गतिविधियों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि विभाग ने साहित्यकारों/ कलाकारों की पारिश्रमिक राशि में वृद्धि कर दी है।

इस अवसर पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. देवेन्द्र चौबे ने समकालीन हिन्दी कहानी के संदर्भ में स्पष्ट किया कि समकालीन शब्द को किसी समय विशेष के साथ जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। कहानी समय की मांग को देखते हुए विषय वस्तु को व्यक्त करने पर ही कहानी को महत्वपूर्ण माना जाता है।

इस अवसर पर तीन कहानीकारों श्री कल्याण जग्गी, श्रीमती रेखा डडवाल एवं श्री त्रिलोक मेहरा ने अपनी कहानियां प्रस्तुत की। बाद में उन पर विस्तृत चर्चा की गई।

दूसरे सत्र में हास्य काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें जिन प्रमुख कवियों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की उनमें से प्रमुख हैं श्री

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-हिमाचल प्रदेश

कल्याण जग्गी, डा. गौतम व्यतिथ, डा. सरोज परमार, श्रीमती रेखा डढवाल, श्रीमती संगीता, श्री राजीव त्रिगर्ती, श्री सुदर्शन भाटिया, प्रज्ञा मिश्रा, शक्ति चन्द राणा, सुमन शेखर, सत्येन्द्र शर्मा, सुरेश सुब्बैया, विजय पुरी, डा. प्रदीप शर्मा, हरमेश बाली आदि।

दूरदर्शन- कृषि दर्शन कार्यक्रम

23.04.2013 को डा. राकेश कुमार सूद ने 'हि.प्र. के चाय बागानों की उच्च गुणवत्तायुक्त प्रथम फलश का प्रबन्धन ,पर वार्ता प्रस्तुत की ।

26.03.2013 को डा. मारकण्डेय सिंह ने 'कांगड़ा घाटी में पुष्पोत्पादन' पर वार्ता प्रस्तुत की ।

26.05.2013 डा. वीरेन्द्र सिंह ने 'विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में कलीनेरी हर्ब्स उत्पादन की संभावनाएं' विषय पर वार्ता प्रस्तुत की ।

18.06.2013 को डा. मारकण्डेय सिंह ने ' लिलियमम पुष्प और कंद उत्पादन हेतु खेती और फसलोंपरांत प्रौद्योगिकी ' विषय पर वार्ता प्रस्तुत की ।

प्रशिक्षण/ कार्यशाला

26 अप्रैल 2013: बाँस प्रवर्धन और उपयोग

पर प्रशिक्षण कार्यशाला संस्थान में आयोजित की गई।

26 जून 2013: उप-निदेशक, उद्यान, कांगड़ा के कार्यालय में 52 किसानों को व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कर्तित पुष्प की खेती विषय पर डा. राजा राम ने प्रशिक्षण दिया।

7-8 मई 2013: प्राकृतिक मिठासयुक्त पौधे स्टीविया के लिए उन्नत उत्पादन तकनीक विषय पर संस्थान के चंदपुर फार्म में ग्रीन कोर्फ प्रा. लि., मुबई के दो उद्यमियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

31 मई 2013: संस्थान के वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मियों के लिए टैरीडियोफाइट्स के अध्ययन सामग्री के एकत्रण, पहचान और संरक्षण के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

चिटीन और चिटोसन शोध पर तृतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 7-8 जून 2013, संस्थान तथा भारतीय चिटीन और चिटोसन संस्था ने संयुक्त रूप संस्थान में आयोजित की। इस संगोष्ठी में विज्ञान एवं तकनीक से जुड़े लगभग 50 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की।

शोध प्रकाशन

Acharya Karan, Pal Awadhesh K, Gulati Arvind, Kumar Sanjay, Singh Anil K and Ahuja PS (2013) Overexpression of Camellia sinensis Thaumatin-Like Protein, CsTLP in Potato Confers Enhanced Resistance to Macrophomina phaseolina and Phytophthora infestans Infection. *Molecular Biotechnology*, 54(2): 609-622.

Bafana Amit (2013) Characterization and optimization of production of exopolysaccharide from *Chlamydomonas reinhardtii*. *Carbohydrate Polymers*, 95(2): 746-752.

Das Pralay, Aggarwal Nidhi and Guha Nitul Ranjan (2013) Solid supported Ru(0) nanoparticles: an efficient ligand-free heterogeneous catalyst for aerobic oxidation of benzylic and allylic alcohol to carbonyl. *Tetrahedron Letters*, 54(23): 2924-2928.

Dua Virendra K, Verma Gaurav, Singh Bikram, Rajan Aswathy, Bagai Upma, Agarwal Dau Dayal, Gupta NC, Kumar Sandeep and Rastogi Ayushi (2013) Anti-malarial property of steroidal alkaloid conessine isolated from the bark of *Holarrhena antidysenterica*. *Malaria Journal*, 12: Article Number: 194 DOI: 10.1186/1475-2875-12-194.

Hossain Mohammad Musharof, Sharma Madhu and Pathak Promila (2013) In vitro propagation of *Dendrobium aphyllum* (Orchidaceae)-seed germination to flowering. *Journal of Plant Biochemistry and Biotechnology*, 22(2): 157-167.

Jha Ashwani and Shankar Ravi (2013) miReader: Discovering Novel miRNAs in Species without Sequenced Genome. *PLOS One*, 8(6): Article Number: e66857 DOI: 10.1371/journal.pone.0066857

Joshi Robin Sharma Poonam, Sharma Virbala Prasad R, Sud RK and Gulati Ashu (2013) Analysis of the essential oil of large

cardamom (*Amomum subulatum* Roxb.) growing in different agro-climatic zones of Himachal Pradesh, India. *Journal of the Science of Food and Agriculture*, 93(6): 1303-1309.

Kant K, Walia M, Agnihotri VK, Pathania Vijaylata and Singh B (2013) Evaluation of Antioxidant Activity of *Picrorhiza kurroa* (Leaves) Extracts. *Indian Journal of Pharmaceutical Sciences*, 75(3): 324-329.

Kumar Rakesh, Sharma Saurabh, Sood Swati, Agnihotri Vijai K and Singh Bikram (2013) Effect of diurnal variability and storage conditions on essential oil content and quality of damask rose (*Rosa damascena* Mill.) flowers in north western Himalayas. *Scientia Horticulturae*, 154: 102-108.

Kumar Surender, Singh Lakhmir, Ferretti Luca, Barba Marina, Zaidi Aijaz A and Hallan Vipin (2013) Evidence of Grapevine leafroll associated virus-1-3, Grapevine fleck virus and Grapevine virus B Occurring in Himachal Pradesh, India. *Indian Journal of Virology*, 24(1): 66-69.

Kumar Vinay and Yadav Sudesh Kumar (2013) Overexpression of CsANR Increased Flavan-3-ols and Decreased Anthocyanins in Transgenic Tobacco. *Molecular Biotechnology*, 54(2) Pages: 426-435.

Kumar Vinay, Nadda Gireesh and Kumar Sanjay (2013) Transgenic Tobacco Overexpressing Tea DNA Encoding Dihydroflavonol 4-Reductase and Anthocyanidin Reductase Induces Early Flowering and Provides Biotic Stress Tolerance. *PLOS One*, 8 (6): Article Number: e65535 DOI: 10.1371/journal.pone.0065535.

Kumar Vinay, Nadda Gireesh, Kumar, Sanjay and Yadav Sudesh Kumar (2013) Transgenic Tobacco Overexpressing Tea cDNA Encoding Dihydroflavonol 4-Reductase and Anthocyanidin Reductase Induces Early Flowering and Provides Biotic Stress Tolerance. *PLOS*

One, 8(6): Article Number: e65535 DOI: 10.1371/journal.pone.0065535.

Kumari Alka, Pandey Vimal Chandra and Rai Upendra Nath (2013) Feasibility of fern *Thelypteris dentata* for revegetation of coal fly ash landfills. *Journal of Geochemical Exploration*, 128: 147-152.

Kumari Reenu, Bhardwaj Pooja, Singh Lakhmir, Zaidi Aijaz A and Hallan Vipin (2013) Biological and Molecular Characterization of Cucumber mosaic virus Subgroup II Isolate Causing Severe Mosaic in Cucumber. *Indian Journal of Virology*, 24(1): 27-34.

Pakade Yogesh B, Sharma Ruchi, Nadda Gireesh and Tewary Dhananjay Kumar (2013) Analytical Method for Determination of Organochlorine Pesticides in Tea Brews using Single-Drop Microextraction with GC-ECD. *International Journal of Food Properties*, 16 (4): 745-755.

Pal AK, Acharya K, Vats SK, Kumar S and Ahuja PS (2013) Over-expression of PaSOD in transgenic potato enhances photosynthetic performance under drought. *Biologia Plantarum*, 57(2): 359-364.

Pathania Shivalika, Randhawa Vinay and Bagler Ganesh (2013) Prospecting for Novel Plant-Derived Molecules of *Rauvolfia serpentina* as Inhibitors of Aldose Reductase, a Potent Drug Target for Diabetes and Its Complications. *PLOS One*, 8(4) Article Number: e61327 DOI: 10.1371/journal.pone.0061327.

Paul Asosii and Kumar Sanjay (2013) Dehydrin2 is a stress-inducible, whereas Dehydrin1 is constitutively expressed but up-regulated gene under varied cues in tea [*Camellia sinensis* (L.) O. Kuntze]. *Molecular Biology Reports*, 40(5): 3859-3863.

Randhawa Vinay, Sharma Purnima, Bhushan Shashi and Bagler, Ganesh (2013)

Identification of Key Nodes of Type 2 Diabetes Mellitus Protein Interactome and Study of their Interactions with Phloridzin. *OMICS-A Journal of Integrative Biology*, 17(6): 302-317.

Shah Wajaht A, Dar Mohd Yousuf, Zagar M Iqbal, Agnihotri Vijai K, Qurishi MA and Singh Bikram (2013) Chemical composition and antimicrobial activity of the leaf essential oil of *Skimmia laureola* growing wild in Jammu and Kashmir, India. *Natural Product Research*, 27(11): 1023-1027.

Sharma Vivek, Bhandari Pamita, Singh Bikram, Bhattacharya Amita and Shanmugam Veerubommu (2013) Chitinase Expression Due to Reduction in Fusaric Acid Level in an Antagonistic *Trichoderma harzianum* S17TH. *Indian Journal of Microbiology*, 53(2): 214-220.

Shivanna Naveen, Naika Mahadev, Khanum Farhath and Kaul Vijay K (2013) Antioxidant, anti-diabetic and renal protective properties of *Stevia rebaudiana*. *Journal of Diabetes and Its Complications*, 27(2): 103-113.

Singh Chitra, Kumar Vishal, Sharma Upendra, Kumar, Neeraj and Singh Bikram (2013) Emerging Catalytic Methods for Amide Synthesis. *Current Organic Synthesis*, 10(2): 241-264.

Singh S, Sud RK, Gulati A, Joshi R, Yadav AK and Sharma RK (2013) Germplasm appraisal of western Himalayan tea: a breeding strategy for yield and quality improvement. *Genetic Resources and Crop Evolution*, 60(4): 1501-1513.

Uniyal SK (2013) Bark removal and population structure of *Taxus wallichiana* Zucc. in a temperate mixed conifer forest of western Himalaya. *Environmental Monitoring and Assessment*, 185(4): 2921-2928.

संस्थान में जैवसंपदा



पचौली *Pogostemon cablin* (Blanco)

पचौली एक सगंध पौधा है जिससे एक महत्वपूर्ण वाष्पशील तेल मिलता है जो विशेष प्राचीन प्रकार के इत्रों में प्रयोग किया जाता है। यह साबुन, श्रृंगार, तम्बाखू और अगरबत्ती में भी प्रयोग किया जाता है। पचौली तेल, लकड़ी और पुष्ट सुगंध देता है जो कि आफ्टर शेव व अन्य टायलैट उत्पादों में प्रयोग में लाया जाता है। यह तेजपत्र, लोंग, खस के तेलों और साबुन उधोगों में प्रयुक्त अन्य सगन्ध तेलों के साथ अच्छी तरह से मिल जाता है। यह तेल कीट पंतगों और जोंक जैसे कीटों के लिए कीटनाशक बनाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। इसके सूखे पत्तों को कपड़ों को सुगंधित बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। सूखी टहनियों को शराब के स्वाद को बढ़ाने के लिए भी प्रयोग

में लाया जाता है।

पचौली की उत्पत्ति के बारे में अनिश्चितता है परन्तु यह भारत इन्डोनेशिया, फिलीपाइन्स, श्रीलंका, मलेशिया और सिंगापुर में पाया जाता है। पचौली की खेती सर्वप्रथम जावा में सन 1895 में शुरू की गई। वर्तमान में इन्डोनेशिया, मलेशिया, चीन और ब्राजील में व्यावसायिक तेल का उत्पादन किया जाता है। पचौली रूस के शीतोष्ण जलवायु में वार्षिक फसल के रूप में उगाया जाता है। इन्डोनेशिया वर्ष भर में 1300 टन पचौली तेल का उत्पादन करके प्रथम स्थान पर है। भारत तामिलनाडु के नारियल और सुपारी के बागानों में उगी फसलों से 200 कि.ग्रा. तेल का उत्पादन ही कर पाता है। इस तेल की वार्षिक घरेलू मांग 200 टन है। विश्व भर में पचौली तेल की मांग 2000 टन है तथा उत्पादन केवल 1500 टन। इस तेल की उच्चतम कीमत 150 डालर प्रति कि.ग्रा. है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय कीमत 30.35 डालर कि.ग्रा. है। भारत से इस तेल के निर्यात की अपार संभावनाएं हैं।

प्रकाशक = डा. परमवीर सिंह आहूजा, निदेशक
सी.एस.आई.आर. आई.एच.बी.टी. पालमपुर (हि.प्र.)

दूरभाष: 01894.230411 फ़ैक्स: 01894.230433

E-mail : director@ihbt.res.in

Website : <http://www.ihbt.res.in>

संकलन एवं संपादन

डा. आर.डी. सिंह, प्रमुख वैज्ञानिक
श्री मुख्त्यार सिंह, पुस्तकालय अधिकारी
श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
श्री जसबीर सिंह, तकनीकी सहायक
फोटोग्राफी श्री पवित्र गाइन

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर—हिमाचल प्रदेश